om 8 initial_Page 1 and 2 10-07-2014 21:34 Page 8

कथा सरिता

धर्मनिष्ठता

किसी गांव में एक नीतिवान सज्जन रहते थे। एक बार एक यात्री अपनी बेटी के साथ उनके घर आया। रात्रि विश्राम के लिए उन्होंने आश्रय मांगा, तो सज्जन ने उन्हें सहर्ष आश्रय प्रदान कर दिया। भोजन के बाद अतिथि ने कहा - भद्र मैं कुछ दिनों के लिए दूरस्थ प्रदेश की यात्रा पर जा रहा हूं। यदि आप मेरी कन्या को मेरे वापस आने तक अपने घर ठहरने दें, तो बड़ी कृपा होगी। सज्जन ने अनुरोध स्वीकार कर लिया। दिन गुज़रते गए किंतु अतिथि नहीं आया। गांवभर में उस कन्या को लेकर चर्चाएं होने लगी। जिस गांव में सज्जन के व्यवहार की प्रशंसा होती थी, उसी गांव में अब उसकी आलोचना होने लगी।

एक बार रात में सज्जन ने स्वप्न में देखा कि उनके घर से यशलक्ष्मी जा रही है। इधर, सज्जन का व्यापार भी प्रभावित होने लगा। कुछ दिनों बाद उन्हें पुन: स्वप्न आया जिसमें उनके घर की सौभाग्यलक्ष्मी भी जाती दिखी। उन्होंने रुकने का अनुनय किया, पर वह भी नहीं रुकी। दिन-ब-दिन सज्जन के घर की हालत जर्जर होती गई और वे निर्धन हो गए। उन्होंने स्वप्न देखा कि धर्म भी उन्हें छोड़कर जा रहा है। इस पर उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने धर्म से कहा - मैंने यशलक्ष्मी व सौभाग्यलक्ष्मी को इसलिए नहीं रोका कि तुम मेरे साथ हो। तुम जानते हो मैं अपने कर्तव्य पर दृढ़ हूं, तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते। उनकी यह बात सुनकर धर्म रुक गया। धर्म जब ठहर गया तो उन सज्जन के पास यशलक्ष्मी व सौभाग्यलक्ष्मी भी लौट आईं।

वास्तव में अतिथि पाप था जिसने अपनी पत्नी दरिद्रता को कन्या बताकर सज्जन के घर छोड़ रखा था। लेकिन उन सज्जन ने धर्म पर दृढ़ रहकर न केवल पाप के इरादे पर पानी फेर दिया वरन यह भी दिखा दिया कि मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में भी यदि धर्म पर दृढ़ रहे तो उसे यश, मान व धन की प्राप्ति होकर ही रहती है।

मंत्री का चयन

एक बड़े साम्राज्य के प्रधानमंत्री का अचानक देहांत हो गया। राजा के सामने नए प्रधानमंत्री के चुनाव की समस्या आ गई। उन्होंने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि महाराज कल नए प्रधानमंत्री का चयन करेंगे, योग्य व्यक्ति पहुंचें। कई व्यक्ति इस पद के लिए राजा के सामने उपस्थित हुए। राजा ने अपने अनुसार चयन की प्रक्रिया शुरु कर दी। अन्तिम परीक्षा तक केवल तीन व्यक्ति ही राजा के सामने रह गए। जब तीन व्यक्ति बचे तो राजा चिंतित दिखाई देने लगे, क्योंकि अभी तक उन्हें कोई प्रधानमंत्री पद के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिला था। राजा उन तीनों को लेकर एक छोटी-सी कोठरी के पास पहुंचे और सेवक से ताला मंगवाकर कहा - 'मैं आप तीनों को इस कोठरी में बन्द करके बाहर ताला लगा देता हूँ। जो ताला खोलकर बाहर आ जाएगा, वही प्रधानमंत्री पद के योग्य होगा। ताले की चाबी खिड़की से इस कोठरी में डाल दूंगा।' वे तीनों युवक कोठरी में खड़े-खड़े एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। राजा ने कोठरी का कपाट बन्द कर ताला लगा दिया और चाबी अन्दर डाल दी। तीनों युवक विचार करने लगे। एक ने कहा - 'यह कैसे हो सकता है, हम अन्दर हैं और ताला बाहर लगा हुआ है।' वह निराश होकर बैठ गया।

दूसरा कहने लगा - 'मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।' वह असमंजस की स्थिति में इधर-उधर घूमने लगा। तीसरा चुपचाप कपाट के पास आया और उसे ज़ोर से खींचा तो कपाट खुल गया। बाहर राजा स्वयं खड़े थे। उन्होंने युवक को गले लगाकर तत्काल प्रधानमंत्री बना दिया। युवक को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बाहर आकर देखा कि राजा ने बिना सांकल लगाए ताला लगाया था। राजा ने कहा, मैं देखना चाहता था कि तुम में से खोलने का प्रयास कौन करता है यानि पुरुषार्थ कौन करता है। केवल तुमने कोशिश की और यही तुम्हारी सफलता का राज़ है।

संकल्प का बल

डॉ. भीमराव अंबेडकर स्वयं दलित वर्ग के थे। अत: दलितों व शोषितों की पीड़ा को भली-भांति समझते थे। वे चाहते थे कि दलित वर्ग को भी सामान्य वर्ग की तरह जीने का अधिकार मिले। उन्होंने दलित हित में काम करना शुरु किया। इस क्रम में बंबई (अब मुम्बई) लेजिस्लेटिव असेंबली ने एक बिल पास किया, जिसके अनुसार तालाब और कुंए सार्वजनिक प्रयोग के लिए खुले कर दिए गए। कानून के अनुसार इन जलस्रोतों पर किसी जाति विशेष का अधिकार नहीं रहा। हर व्यक्ति इनका उपयोग कर सकता था। यह निर्णय भी लिया गया कि कोलाबा जिले में स्थित महानगर पालिका के टैंक का पानी दलितों द्वारा प्रयोग में लाया जा सकता है। कानून तो बन गया, किंतु अमल में लाने का साहस किसी में नहीं था। सवर्णों के विरोध का भय था। तब डॉ. अंबेडकर ने घोषणा की कि वे स्वयं कोलाबा टैंक का पानी दलितों के लिए खोलेंगे। उनकी इस घोषणा से खलबली मच गई। सवर्ण समाज में क्रोध था। डॉ. अंबेडकर ने दलितों का एक समूह बनाया और 19-20 मार्च 1927 को टैंक का पानी खोलने का ऐलान किया। निश्चित तारीख पर डॉ. अंबेडकर कोलाबा आए। वहाँ सवर्णों की भारी भीड़ मौजूद थी। डॉ. अंबेडकर ने सवर्णों का गुस्सा देखा, किंतु बिना किसी घबराहट के शांत भाव से जाकर टैंक खोल दिया। पानी की धारा बह निकली। दलितों ने प्रसन्न होकर डॉ. अंबेडकर का जयकारा लगाया और पानी पीने लगे। सवर्णों को अपना क्रोध दबाना पड़ा और डॉ. अंबेडकर दलितों के लिए कुछ बेहतर करने का संतोष लेकर वहां से लौट गए। दृढ़निश्चयी के लिए राह के शूल भी फूल हो जाते हैं। वस्तुत: पक्का इरादा ही वह हौसला देता है, जो बाधाओं से पार ले जाता है।

लक्ष्य प्राप्ति की राह

प्रसंग उन दिनों का है जब थॉमस अल्वा एडिसन फोनोग्राम बनाने के काम में जी-जान से जुटे हुए थे। नए आविष्कार की राह में बाधाएं आती ही हैं, जो एडिसन के सामने भी आईं, किंतु वे हारकर पीछे हटने वालों में से नहीं थे। एक दिन उनके समक्ष भारी-हल्के स्वर निकालने वाली एक मशीन से संबंधित कोई समस्या खड़ी हो गई। उन्होंने यह समस्या अपने एक सहायक जॉर्ज को समझाई और उसे इसके समाधान की दिशा में कार्य करने को कहा। जॉर्ज ने दो वर्ष तक उस समस्या पर काम किया, किंतु वह उसका हल नहीं खोज पाया। अब उसका धैर्य समाप्त हो चुका था। वह एक दिन एडिसन के पास आया और बोला, 'मिस्टर एडिसन! मैंने आपके हज़ारों डॉलर और अपने जीवन के दो वर्ष इस काम में खपा दिए, किंतु नतीजा कुछ नहीं निकला। यदि आपके स्थान पर कोई और होता तो मैं इतना भी नहीं रुकता और काम छोड़कर चला जाता। पर अब मैं धैर्य खो चुका हूँ। मैं इस्तीफा देना चाहता हूँ। कृपया आप इसे स्वीकार करें।' यह कहते हुए उसने इस्तीफा एडिसन की मेज पर रख दिया। एडिसन ने तत्काल उस कागज़ को फाड़ दिया और बोले, 'मैं तुम्हारा इस्तीफा नामंज़ूर करता हूँ, जॉर्ज! मेरा विश्वास है कि प्रत्येक समस्या, जो ईश्वर ने हमें दी है, उसका समाधान उसके पास है। हम भले ही उस समाधान तक न पहुंच सकें, किंतु कभी न कभी कोई उसे अवश्य खोज निकालेगा। तुम वापस जाओ और कुछ समय और परिश्रम करो। हो सकता है इतने दिन की मेहनत के बाद सफलता बस मिलने ही वाली हो।' जॉर्ज ने यही किया और समस्या का हल अंतत: उसे मिल ही गया। महत्वपूर्ण उपलब्धियों का सफर धैर्य और परिश्रम के साथ ही पूर्ण होता है और अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त होता है।

समाज में मूल्यों... पेज 1 का शेष...

गणेश वंदना की प्रस्तुति से शुरु हुए कार्यक्रम में मुम्बई से आई ज्योति सेठ ने ऐ मालिक तेरे बंदे हम...सुरीले स्वर में गाकर संध्या की सफलता का आधार तैयार किया। इन्दौर स्थित शिवम नृत्य कलाकेन्द्र के कलाकारों ने मन की वीणा से गुंजित ध्वनि मंगलम नृत्य गीत द्वारा उपस्थित जनसमुदाय का स्वागत किया। विशाखापटनम की नर्तनशाला नृत्य अकादमी के कलाकारों ने जयभारती के माध्यम से अपने देश की महिमा का बखान किया। इसी नृत्य संस्था के कलाकारों ने शिव रूद्रम पशुपतिम नृत्य के जरिए भगवान शिव का अभिवादन किया। बेलगाव से आई रानी, शिल्पा, अश्विनी, तीनों बहनों के नृत्य ने दर्शकों का मन मोह लिया। सिद्धपुर से आई निधि ने बहुत ही सुंदर लोकनृत्य की प्रस्तुती दी। विशाखापटनम की नृत्य अकादमी के दो और आकर्षक नृत्यों ने सांस्कृतिक संध्या को समापन की ओर अग्रसर किया। मंच संचालन ब्र.कु. विवेक ने किया तथा ब्र.कु. चंद्रकला का मंच संचालन में भरपूर सहयोग रहा।

नागौर-राज.। न्यायाधीश माधवी दिनकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी रतनमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. अनिता व ब्र.कु. लीला।

मुम्बई। मुम्बई में आयोजित अवार्ड फंक्शन में ब्र.कु. डॉ. रमेश को डॉक्टर ऑफ साइंस डॉक्टरेट अवार्ड, लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड व गोल्ड मेडल से सम्मानित करते हुए डॉ. मेहर मास्टर मूस तथा रशिया के काउन्सलर, डायरेक्टर्स।

पण्डोह-मण्डी। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् प्रधान नरेन्द्र वैद्य तथा पी.ओ. सुभाष गौतम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दक्षा। साथ हैं ब्र.कु. रुमा व ब्र.कु. गुलाब भाई।

मोतिहारी-बिहार। बालगंगा में नए सेवाकेन्द्र 'प्रभु पसंद भवन' के उद्घाटन अवसर पर आयोजित समारोह में सम्बोधित करते हुए सी.आर.पी.एफ. के डिप्युटी कमाण्डेंट विक्रम। साथ हैं ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. शशि भाई।

नवसारी-गुज.। रेलवे स्टेशन पर 'व्यसन मुक्ति' प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अरविंद डी. पटेल,स्टेशन मास्टर, संजीव भट्ट,स्टेशन सुप्रीन्टेंडेंट, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. भानु तथा अन्य।

खोरधा-ओडिशा। विधायक राजेन्द्र कुमार साहूजी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनु।